International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 14-01-2019; Accepted: 17-02-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 2; March 2019; Page No. 16-18

प्रेमचंद तथा मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में अंतर्गत मनोवैज्ञानिकता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० आर० के० डी० निलंति कुमारी राजपक्ष
ज्येष्ठ व्याख्याता, भाषा, संस्कृति एवं रंग कला अध्ययन विभाग, श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, गंगोडविल, नुगेगॉड, श्री लंका।

प्रस्तावना

प्रेमचन्द का समय सन् 1880 से सन् 1936 तक और मार्टिन विक्रमसिंह का समय सन् 1890 से सन् 1976 तक है। दोनों साहित्यकार अलग–अलग देशों से हैं फिर भी उनकी कहानियों में बहुत सी समानताएँ पाई जाती हैं। समकालीन होने के नाते दोनों कहानीकारों की विषयवस्तु पर तत्कालीन समस्याओं का प्रभाव पड़ा है।

प्रेमचन्द यथार्थ निरूपित करने वाले कहानीकारों में अग्रन्य कहानीकार हैं। ऐसा होते हुए भी उनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिकता का पुट प्रायः मिलता है। स्वयं प्रेमचन्द जी ने लिखा है– "सबसे उत्तम कहानी वही होती है जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो।"[1] कहानी में पात्रों की मनोदशा का वर्णन कहानी को प्रभावी बनाने में सहायक होता है।

'पूस की रात' प्रेमचन्द की एक विशिष्ट कहानी है। इस कहानी का विषय किसानों की आर्थिक स्थिति से संबंधित है। यह विषय मनोवैज्ञानिकेतर है। लेकिन उन्होंने कहानी का प्रस्तुतीकरण मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है। इस कहानी में आरंभ से अंत तक मनोवैज्ञानिक पुट मिलता है। कहानी का आरंभ हल्कू और मुन्नी के संवाद से होता है। निम्नलिखित वाक्य हल्कू की मनोदशा को व्यक्त करते हैं–

"हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा।....
"हल्कू इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय
निकालकर देने जा रहा हो।"[2]

उपर्युक्त वाक्य से हल्कू की मानसिक स्थिति अच्छी तरह पहचानी जा सकती है। कम्बल के लिए जमा किये हुए तीन रुपये सहना को देने के लिए जाते समय हल्कू के हृदय में अनेक प्रकार के ख्याल उत्पन्न हुए। कंबल के बिना पूस की रात खेत में कैसे बिताएंगे। कंबल के लिए दूसरा उपाय भी उन लोगों के पास नहीं था। पत्नी के मना करने पर भी हल्कू सहना को पैसे दे देता है। पैसे तो वह अब भी देना नहीं चाहता था। पर मजबूरी के कारण दे दिए।

कहानी में हल्कू बिना कंबल के खेत की रखवाली करने के लिए जाता है। उसके साथ कुत्ता जबरा भी जाता है। हल्कू अपना अकेलापन मिटाने के लिए जबरा के साथ बात करता है।

"हल्कू ने कहा– अब तो नहीं रहा जाता जबरू! चलो!, बीचे में पत्तियाँ बटोकर तापें। टाँढे हो जाएंगे, तो फिर आकर सोएंगे। अभी तो रात बहुत है।

जबरा ने कूँ–कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे–आगे बगीचे की ओर चला।"[3]

कहानी का अंत दो वाक्य से होता है जो मनोवैज्ञानिक है–

"मुन्नी ने निश्चिंत होकर कहा– अब मजूरी करके मालगुजारी करनी पड़ेगी।"

"हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा"
"रात की ठंड में वहाँ सोना तो नहीं पड़ेगा।"[4]

प्रेमचन्द की और एक महत्वपूर्ण कहानी है 'बड़े भाई साहब'। यह कहानी भी मनोवैज्ञानिकता से युक्त है। इस कहानी में मुख्य चरित्र बड़े भाई साहब हैं। बड़े भाई साहब हमेशा पढ़ते रहते हैं फिर भी परीक्षा में हमेशा फेल हो जाते हैं। उसका छोटा भाई खेलकूद में मजा लेते हुए भी हमेशा परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है। परीक्षा में असफलता के कारण बड़े भाई साहब अपने दोषों का आरोपण दूसरों पर करके संतोष की साँस लेते दिखाई देते हैं। साथ–साथ वे छोटे भाई की असफलता की राह देखते हैं। बड़े भाई साहब की मानसिक स्थिति का वर्णन पूरी कहानी में है।

'नशा' कहानी भी प्रेमचन्द के द्वारा रचित मनोविश्लेषणात्मक कहानी है। आमतौर पर बहुत सी कहानियों में प्रेमचन्द ने गरीबों का पक्ष लिया है। किंतु नशा कहानी में वे गरीबों को दोष देते दिखाई देते हैं। लेखक ही इसका मुख्य चरित्र है। वह एक गरीब क्लर्क का बेटा था। वह हमेशा जमींदार की बुराई करता–रहता है। उसका दोस्त ईश्वरी जमींदार का बेटा था। एक दिन छुट्टी में लेखक ईश्वरी के साथ उसके गाँव जाता है। ईश्वरी के घर रहते–रहते वह अपने को भी रईस की तरह सोचने लगा। वह अपनी असली स्थिति भूल गया। इसलिए रेलगाड़ी में एक गरीब आदमी को अपने शरीर में लगने के कारण मार दिया। तब ईश्वरी ने उसको डाँटा तब उसको अपनी असली स्थिति याद आई।

प्रेमचन्द की 'धिक्कार' कहानी में विधवाओं की दुर्दशा का मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया गया है। कहानी में मुख्य चरित्र मानी है वह एक विधवा है। वह अपने माता–पिता से भी वंचित है। चाचा के पास रहते हुए मानी को बहुत कष्टों का सामना करना पड़ा। इंद्रनाथ ने मानी से प्यार किया और शादी भी की। मानी अपनी सास के साथ बंबई अपने पति के पास जाने वाली थी। उसके चाचा ने स्टेशन पर आकर मानी को बहुत बुरा भला कहा।

"लाला वंशीधर– मुझे मत छू दूर रह अभागिनी कहीं की।.... तुझ जैसी पापिष्ठाओं का मरना ही अच्छा है, पृथ्वी का बोझ कम हो जाएगा।"

इन शब्दों से मानी के दिल में गहरा आघात लगा। वह गाड़ी में बैठी–बैठी सोच–विचार करने लगी। वह अपने आप सोचने लगी कि– "आह! मैं इतनी नीच हूँ, ऐसी पतित, कि मेरे मर जाने से पृथ्वी का भार हलका हो जाएगा।"[5]

मानी के मन में अनेक विचार आने लगे। अंत में उसने गाड़ी से

[1] प्रेमचन्द एक सिंहावलोकन, प्रा.ह.श्री. साने (संपादक) पृ. 103
[2] प्रेमचन्द : किसान जीवन संबंधी कहानियाँ (पूस की रात), रवीन्द्र कालिया (संपादक) पृ. 21, 22
[3] प्रेमचन्द : किसान जीवन संबंधी कहानियाँ (पूस की रात), रवीन्द्र कालिया (संपादक) पृ. 24
[4] प्रेमचन्द : किसान जीवन संबंधी कहानियाँ (पूस की रात), रवीन्द्र कालिया (संपादक) पृ. 26
[5] प्रेमचन्द की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, (धिक्कार), प्रेमचन्द पृ. 138

कूद कर प्राण त्याग दिया। उपर्युक्त गद्यांश से मानी की मानसिक दशा को समझा जा सकता है।

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में मनोवैज्ञानिकता

मार्टिन विक्रमसिंह की प्रायः सभी कहानियों में मनोवैज्ञानिकता विद्यमान है। मार्टिन विक्रमसिंह ने अपनी कहानियों के स्त्री और पुरुष पात्रों की मानसिकता चित्रित करने में मनोवैज्ञानिकता का सहारा लिया है। 'अभिरहस' कहानी में स्त्री और पुरुष पात्रों की मानसिकता को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। सिसिलिया नामक विवाहिता स्त्री एक दफ्तर में मुंशी का काम करने वाले अपने पति के आने के इन्तजार में अपने घर में अकेली रहती है। इसी दौरान नौकरी की तलाश में भटकते हुए लिसी नामक तरुणी उसके घर में आती है। लिसी की दुखी जीवन की कहानी सुनकर सिसिलिया का मन पिघल जाता है। तब वह अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए तथा घरेलू काम–काज करवा लेने के लिए लिसी को अपने घर में रुकने के लिए कह देती है। लेकिन अनपेक्षित ढंग से पति इसका विरोध करता है। विरोध का कारण बताते हुए वह कहता है–

"वह स्त्री बहुत सुंदर है। वही विरोध का कारण है।"[6]

स्त्री की मनःस्थितियों के चित्रण में मनोवैज्ञानिकता का प्रयोग किया जाना, सिसिलिया का आइने के सामने जाना और आइने से प्रतिबिंबित अपने शरीर को निहारते हुए–

"क्या मैं सुंदर नहीं हूँ।"[7]
इस प्रकार कहने से प्रकट होता है।

अपने पति के कथन के आधार पर सोचती हुई सिसिलिया, लिसी को अपने घर से निकाल देती है। सिसिलिया का यह परिवर्तन लिसी को आश्चर्य चकित कर देता है। लेकिन सिसिलिया लिसी पर इतनी संवेदना जताती है कि जाने से पहले उसने लिसी को पाँच रुपए दिए। लिसी द्वारा रुपए लेने से इन्कार करने से उसकी ऊँची मानसिकता प्रकट की गई है। अंत में पुरुष के अंतर्मन की लालसाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण 'अभिरहस' कहानी में निम्न प्रकार मिलता है।

विलियम जयवीर (पति) ने सुबह उठकर जैसे ही हाथ मुँह धोया वैसे ही उसे लिसी को देखने की लालसा हुई। लिसी को न पाकर वह अपनी पत्नी सिसिलिया से पूछता है–

सिसी वो लिसी कहाँ है? जबाव के रूप में सिसिलिया निम्न प्रकार प्रश्न करती है

"वह चली गई तुम क्यों पूछते हो?"[8]

इस प्रकार पति–पत्नी की मनःस्थितियों के मार्मिक चित्रण करने में मार्टिन विक्रमसिंह ने मनोवैज्ञानिकता का सहारा लिया है।

'उपासकम्मा' कहानी में मानव मन में भरी हुई लालसा का चित्रण मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रकट किया गया है। उपासकम्मा के बड़े सन्दूक में बहुत सारे प्याले और थालियाँ पड़े हुए हैं। जब बहू उनमें से एक कटोरे में उपासकम्मा के लिए दवा लाती है तब उपासकम्मा उस कटोरे की ओर बहुत देर तक ताकती हुई निम्न प्रकार कहती है–

"सन्दूक में पड़ा हुआ कटोरा क्यों ले लिया? मेहमानों के आने पर भी मैं उन कटोरों का प्रयोग नहीं करती।"[9]

बहू उपासकम्मा की लालसा पर वाग प्रहार करती है। जबकि उपासकम्मा की मृत्यु के बाद वह उससे भी अधिक लालसा युक्त हो जाती है। उपासकम्मा की लाश को दफनाने के लिए सन्दूक तक वह नहीं लेती। मानव के अंतर्मन के विचारों को उभारने में मार्टिन विक्रमसिंह में मनोवैज्ञानिक की सी कुशलता है। वह कुशलता उपासकम्मा के अंतिम संस्कार के अवसर पर उपस्थित लोगों को बहू द्वारा कहलाए जाने वाले निम्न लिखित शब्दों से प्रकट होती है।

"माता जी ने पूर्णिमा के प्रत्येक दिन में धार्मिक कार्य किया। उन्होंने पंचशील को अपनाया और उन्होंने तपस्या भी की थी। लेकिन रुपयों के खर्च करने से वे हिचकती थीं। यहाँ तक कि उन्होंने भिक्षुओं को दान तक नहीं दिया। मुझसे जितना हो सकता था उतना मैंने उनको खिलाया। मैंने भी उनके लिए जो कुछ किया वह पुण्य के लिए नहीं बल्कि उनके छुपाए हुए धन से कुछ प्राप्त करने की उम्मीद में। जब से मुझे मालूम हुआ कि उनसे एक कौड़ी भी नहीं मिलने वाली है, तब से मैंने उनका सत्कार करना छोड़ दिया।"[10]

स्वार्थी लोगों की मानसिकता का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने में मार्टिन विक्रमसिंह सफल हुए हैं। 'उपासकम्मा' कहानी में उपासकम्मा की लाश को रखने के लिए इधर–उधर की लकड़ियों से सन्दूक बनाया जाता है। उसमें लगने वाली कीलों के लिए भी पैसे खर्च करने में वे हिचकते हैं। उनके अंतिम संस्कार के बाद बहू उपासकम्मा के छुपाए हुए धन की खोज में घर का कोना–कोना छान मारती है। घर के अन्दर गढ़े हुए सोने के सिक्के और कुछ अन्य धन मिलता है। घर में आने के उपरांत जब पति प्राप्त धन के बारे में पूछता है तब बहू निम्न प्रकार जवाब देती है।

"पूरे घर की छान–बीन करने के बाद केवल एक रुपये का सिक्का मिला।"[11]

'कॅस्वॅटिय' कहानी भी लेखक की मनोवैज्ञानिक दृष्टि का सजीव उदाहरण है। बौद्ध भिक्षु भी कभी अपने मन पर नियंत्रण न रख सकने की स्थिति में अदूरदर्शी निर्णय लेता है। बौद्ध भिक्षु नागसोम धर्म प्रचारक हैं। किसी दान के लिए पधारते वक्त बचपन की एक सहेली से उनकी मुलाकात हुई। बचपन में वह लड़की मल्लिका और भिक्षु में प्रेम भावना जगी थी। अब वह विवाहिता थी और उसकी कई संतानें थीं। उससे मिलने पर भिक्षु की प्रेम भावना पुनः जागती है। उसका चित्रण लेखक ने निम्न प्रकार किया है–

"पुनः अपने मंदिर में पधारे भिक्षु नागसोम प्रायः पूरी रात जगते रहे। उनके मन में मल्लिका का रूप सौंदर्य, उसकी प्यार भरी हँसी, आकर्षक चेहरा आदि दृश्य मँडराने लगे। गाँव में पधारने पर अपने घर में पधारने के लिए मल्लिका के द्वारा किए गए निमंत्रण की याद उनके मन में बार बार आने लगी।"[12]

मल्लिका को प्राप्त करने की उम्मीद में उसने कषाय छोड़ दिया। साधारण कपड़े पहनकर वह मल्लिका के घर में आता है।

"मैंने कषाय छोड़ दिया
क्यों?
क्या मल्लिका साहिबा नहीं चाहती कि मैंने कषाय को छोड़ दिया?
अब यहाँ क्यों आए?
मुझे उसके बारे में कहना था
ऐसे समय आइ, जब पति घर में हो।"[13]

---

[6] मगुँल गॅदर (अभिरहस), मार्टिन विक्रमसिंह, पृ. 44
[7] वही, पृ. 44
[8] मगुँल गॅदर (अभिरहस), मार्टिन विक्रमसिंह, पृ. 45
[9] मगुँल गॅदर (उपासकम्मा), मार्टिन विक्रमसिंह, पृ. 108
[10] मगुँल गॅदर (उपासकम्मा), मार्टिन विक्रमसिंह, पृ– 110
[11] वही, पृ– 118
[12] मगुँल गॅदर (कॅस्वॅटिय), मार्टिन विक्रमसिंह, पृ– 63
[13] मगुँल गॅदर (कॅस्वॅटिय), मार्टिन विक्रमसिंह, पृ. 65

ऐसा कहते हुए क्रोधित होकर मल्लिका के चले जाने के चित्रण में लेखक की मनोवैज्ञानिक दृष्टि प्रकट होती है।

उसी प्रकार 'मामगे दुव' कहानी भी मनोवैज्ञानिकता से भरपूर है। सॉमी की मानसिकता का मनोवैज्ञानिक चित्रण निम्न प्रकार हुआ है।

"ऐसा मालूम होने के बाद कि मुझे उसके दिल से निकाल दिया गया है वेदना भरे दिल से मैं वापस घर आया। एक हफ्ते में मेरे दिल की पीड़ा थम गई। फिर भी ममेरी बहन के प्रति मेरे दिल में ईर्ष्या न जली। मुझे मालूम था कि वह मुझे नहीं चाहती थी फिर भी उसका दर्शन मेरे दिल को भाता था।"[14]

इसी प्रकार 'रन पिलिमय' कहानी में सुमना की बातें उसके हाव–भाव, उसके आचरण उसके अंतर्मन के द्योतक है। "गौतम बुद्ध की ह्रष्ट–पुष्ट लेकिन मृदुल सौम्य मूर्ति उस तरुणी को आकर्षक लगती थी। अपने बच्चे के चेहरे को चूमने वाली माता जैसी अपने दाहिने हाथ की उँगलियाँ लालसा से गौतम बुद्ध की मूर्ति के हाथों पर रखकर इधर–उधर देखती है। उसके होंठ काँपने लगे।"[15]

अपने मन को काबू में न रख सकने वाली नारी की दुर्बल मानसिकता का चित्रण मनोवैज्ञानिकता से करने में लेखक की सफलता उपुर्यक्त उदाहरण से स्पष्ट हो जाती है।

इसके अलावा 'वयिन वीदुरुव' कहानी में रानी नामक विवाहिता स्त्री को उपाली नामक युवक द्वारा किए गए अनुचित प्रस्ताव पर लेखक का मनोवैज्ञानिक विचार निम्न प्रकार है–

"रानी को पूरी तरह स्पष्ट है कि अगर उस युवक से और कुछ समय तक मुलाकात होती रहती तो रानी उसके वश में आ जाती।"[16]

इसी प्रकार स्त्री और पुरुष के मन की दुर्बल स्थितियों का चित्रण करने में लेखक ने मनोवैज्ञानिकता का सहारा लिया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः 'पूस की रात' में हल्कू की मनोदशा को व्यक्त करने में प्रेमचंद ने मनोवैज्ञानिकता का सहारा लिया है। 'बड़े भाई साहब' में बड़े भाई साहब की मानसिक स्थिति का वर्णन पूरी कहानी में है। 'नशा' कहानी मनोविश्लेषणात्मक कहानी है। लेखक ही इसका मुख्य चरित्र है। वह एक गरीब क्लर्क के बेटे का मनोविश्लेषण उसमें निहित है। 'धिक्कार' में विधवाओं की दुर्दशा का मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया गया है।

'अभिरहस' में मानव मन में भरी हुई लालसा तथा उन पर नियंत्रण कर पा सकने का चित्रण मार्टिन विक्रमसिंह ने मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रकट किया है। 'उपासकम्मा' में स्वार्थी लोगों की मानसिकता का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। 'कॅस्वॅटिय' में बौद्ध भिक्षु भी कभी अपने मन पर नियंत्रण न रख सकने की स्थिति का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। 'मामगे दुव' में सॉमी की मानसिकता का चित्रण मनोवैज्ञानिकता से भरपूर है। 'रन पिलिमय' अपने मन को काबू में न रख सकने वाली नारी की दुर्बल मानसिकता का चित्रण मनोवैज्ञानिकता से करने में लेखक की सफलता का उदाहरण है। 'वयिन वीदुरुव'में स्त्री और पुरुष के मन की दुर्बल स्थितियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद एवं मार्टिन विक्रमसिंह द्वारा विरचित कहानियों में अंतर्गत मनोवैज्ञानिकता का तुलनात्मक अध्ययन में यह तथ्य उभर आता है कि विषय–वस्तु में थोड़ा–बहुत अंतर होने पर भी पात्रों की मानसिकता के चित्रण में दोनों लेखकों ने सच्चे मनोवैज्ञानिक की तरह सफलता प्राप्त की है।

[14] मार्टिन विक्रमसिंह कॅटिकता एकतुव (मामागे दुव), मार्टिन विक्रमसिंह, पृ. 201
[15] मार्टिन विक्रमसिंह कॅटिकता एकतुव (रन पिलिमय), मार्टिन विक्रमसिंह, पृ. 124
[16] मार्टिन विक्रमसिंह, वहललु (वयिन वीदुरुव), पृ. 47

संदर्भ

1. प्रेमचंद, (2008), प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ, खंड–1, इलाहाबाद, सुमित्र प्रकाशन
2. प्रा.ह.श्री. साने (संपादक), प्रेमचन्द एक सिंहावलोकन,
3. कालिया, रवीन्द्र (संपादक) प्रेमचन्द : किसान जीवन संबंधी कहानियाँ,
4. विक्रमसिंह, मार्टिन. (2012), मगुल गेदर, राजगिरिय, सी.स. सरस समागम
5. विक्रमसिंह, मार्टिन, मार्टिन विक्रमसिंह कॅटिकता एकतुव
6. विक्रमसिंह, मार्टिन, वहललु (वयिन वीदुरुव),